अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के शिक्षकों के साथ किया गया एक प्रयास

नम्रता बत्रा, ज्योति चौरड़िया

अंतर्राष्ट्रीय संवाद में 'अनौपचारिक शिक्षा' शब्द केवल बच्चों की शिक्षा के लिए ही नहीं बल्कि प्रौढ़ शिक्षा और सतत शिक्षा के प्रयासों के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। भारतीय संदर्भ में इस शब्द का एक सीमित अर्थ है। यह वैकल्पिक शिक्षा का ढांचा, ऐसे बच्चों के लिए है जो कई कारणों से स्कूली शिक्षा से जुड़ नहीं पाए हैं।

भारत में अनौपचारिक शिक्षा के साथ प्रयोग 1976 से शुरू हुए थे। इस समय में, अनौपचारिक शिक्षा के केन्द्र, शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए 9 राज्यों में चलाए गए थे। 1986 में नई शिक्षा नीति ने, प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के उद्देश्य से, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम को सुदृढ़ करने को कहा और 1988 में, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम केन्द्र सरकार द्वारा चलाए गए कार्यक्रम के रूप में शुरू किया गया। शुरूआत में यह कार्यक्रम शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए 10 राज्यों– आन्ध्रप्रदेश, असम, बिहार, जम्मू और कश्मीर, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल और अरूणाचल प्रदेश में ही चलाया जा रहा था। बाद में इसे भारत के अन्य राज्यों के पहाड़ी, रेगिस्तानी, जनजातीय और शहरी कच्ची बस्ती वाले इलाकों में भी शुरू किया गया।

नई शिक्षा नीति, 1986

अनौपचारिक शिक्षा का कार्यक्रम ऐसे बच्चों के लिए है जो स्कूल से ड्रापआऊट हो गए हैं, जिनके गांव या कस्बे में कोई स्कूल नहीं है। कामकाजी बच्चों और लड़कियों के लिए जो पूरे दिन वाले स्कूल में नहीं जा सकते हैं। इस कार्यक्रम को सशक्त किया जाएगा और इसका विस्तार किया जाएगा।

...प्रतिभाशाली और समर्पित युवक और युवतियों का स्थानीय समुदाय से, अनुदेशक के रूप में चयन किया जाएगा। इनके प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। अनौपचारिक शिक्षा को औपचारिक शिक्षा के तुल्य बनाने के लिए सभी ज़रूरी कदम लिए जाएंगे। ऐसे कदम लिए जाएंगे जिससे अनौपचारिक तंत्र से पढ़ कर निकले हुए बच्चे, औपचारिक तंत्र में प्रवेश प्राप्त कर सकें।

इस बात के लिए प्रभावशाली कदम लिए जाएंगे जो कि अनौपचारिक शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और सीखने वालों की जरूरतों और स्थानीय परिवेश के आधार हो। उच्च दर्जे की सीखने की सामग्री बनाई जाएगी और यह सीखनेवालों को मुफ्त दी जाएगी।

इस अनिवार्य क्षेत्र की जिम्मेदारी सरकार की है। अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रमों को चलाने की ज़्यादा जिम्मेदारी स्वंयसेवी संस्थाओं और पंचायती राज्य संस्थाओं की है।

राजस्थान में यह कार्यक्रम सरकार और कई गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा चलाया गया। उदयपुर में, सेवा मंदिर संस्था द्वारा यह कार्यक्रम 1980 के दशक से चलाया जा रहा है। आज इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, लगभग 200 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र उदयपुर के आस–पास के पांच, ग्रामीण और मुख्यतः जनजातीय क्षेत्रों– खेरवाड़ा, कोटड़ा, झाड़ोल, बड़गांव और गिर्वा में चलाए जा रहे हैं।

इन केन्द्रों पर पढ़ाने वाले शिक्षक/अनुदेशक, उसी गांव या मौहल्ले के हैं, जिनसे बच्चे आते हैं। इस कारण से, वे बच्चों और उनके परिवारों से अच्छी तरह से परिचित होते हैं। पर ज्यादातर अनुदेशकों ने अपनी स्कूली शिक्षा भी पूरी नहीं की होती है और ऐसे कम ही है जिन्होंने 10 वीं से ऊपर की पढ़ाई की है। अनुदेशकों को अपनी दैनिक

गतिविधियों के दौरान भी पढ़ने–लिखने के अवसर नहीं के बराबर ही मिलते हैं। दैनिक अखबार भी वे सप्ताह में एक या दो बार से ज्यादा नहीं पढ़ पाते हैं। उनकी घर की भाषा मेवाड़ी या वागड़ी है और अपने परिवारों और गांव में ज्यादातर इसी भाषा का इस्तेमाल करते हैं।

विद्या भवन ने 1999 से इन अनुदेशकों के साथ काम शुरू किया। यह काम अनुदेशकों के प्रशिक्षण से ही शुरू किया गया। पर कुछ सालों में ही यह बात साफ हो गई कि वर्ष में दो बार, दस–दस दिनों के लिए इन प्रशिक्षणों में अनुदेशकों से मिलना काफी नहीं है। अनुदेशकों के साथ कई स्तरों पर काम करना जरूरी था– उनकी स्वयं की पढ़ने–लिखने की क्षमता, उनकी गणित की अवधारणात्मक समझ और सवाल करने का कौशल, उनकी बच्चों और पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया के बारे में समझ। इसके लिए अनुदेशकों के साथ सत्तता से जुड़े रहना ज़रूरी था। इसके साथ यह भी बात साफ थी कि अनुदेशक अपने घर और काम को छोड़कर, नियमित अंतराल पर अपने पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया से जुड़े रहने के लिए लम्बी कार्यशालों और प्रशिक्षणों में भाग नहीं ले सकते थे।

अनुदेशकों के लिए प्रशिक्षण कोर्स

इन सब चीजों को ध्यान में रखते हुए विद्या भवन द्वारा इन अनुदेशकों के लिए एक कोर्स शुरू किया गया। यह कोर्स दूरस्थ सह सम्पर्क (Distance cum contact) प्रक्रिया में चलता है। कोर्स में तीन विषयों पर काम हो रहा है– भाषा (हिन्दी), गणित और बच्चों के सीखने की प्रक्रिया। यह प्रशिक्षण कोर्स तीन स्तरों में विभाजित है– पहला, दूसरा और तीसरा। अनुदेशकों का नामांकन पहले स्तर पर होता है और एक स्तर को उत्तीर्ण करने पर उन्हें अगले स्तर पर क्रमोन्नत किया जाता है। इस कोर्स के उद्देश्य हैं–

1. अनुदेशक स्वतंत्र सीखने वाले बने।
2. अनुदेशकों के पढ़ने और लिखने के कौशल का विकास हो।
3. अनुदेशक, गणित की कुछ अवधारणाओं को स्पष्टता से समझें और उसमें सवाल करने के कौशल का विकास हो।
4. अनुदेशकों की बच्चों और सीखने–सिखाने की प्रक्रिया की समझ को बढ़ाना।

इस प्रशिक्षण कोर्स के तीन घटक हैं– वर्कशीट्स, ट्यूटोरियल और लिखित मूल्यांकन।

प्रशिक्षण के प्रत्येक स्तर पर अनुदेशकों के साथ संवाद, वर्कशीट् द्वारा स्थापित किया जाता है। ये वर्कशीट स्व अधिगम सामग्री (self learning material) है। ये अनुदेशकों के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए बनाई गई हैं और इनमें अनुदेशकों को सोचने और अपनी सोच को व्यक्त करने की जगह दी गई है।

हिन्दी की वर्कशीट अनुदेशकों को कहानी, कविता, नाटक, लेख आदि कई शैलियों से परिचित कराती है। प्रत्येक पाठ पर अनुदेशकों को कई तरह के अभ्यास दिए गए हैं। कुछ अभ्यासों में अनुदेशकों को पाठ में दी गई जानकारी छांट कर लिखना होता है तो कई में दी गई जानकारियों के बीच रिश्ते बताने हैं, कारण बताने हैं, अपना मत देना है, कल्पना करनी है, पाठ को नया शीर्षक देना है, सार लिखना है, स्वयं पाठ पर सवाल भी बनाने हैं, आदि। वर्कशीट में अनुदेशकों को स्वतंत्र रूप से कई मुद्दों पर लिखने को भी कहा गया है। गणित की वर्कशीट में अनुदेशकों को जगह दी गई है कि वे उन्हें पढ़ते हुए, अवधारणाओं से जूझें। उन्हें समझे और कई संदर्भों में अभ्यास करें 'बच्चों की सीखने की प्रक्रिया' विषय की वर्कशीट में अनुदेशकों को पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया में कई प्रासंगिक मुद्दों पर लेख, भिन्न–भिन्न कक्षाओं के विवरण, कई शिक्षकों के अनुभव आदि पढ़ने के लिए दिए जाते हैं। इन वर्कशीट में दिए गए अभ्यास अनुदेशकों को प्रेषित करते हैं कि वे मुद्दों के बारे में गहनता से सोचे और अपने कक्षा की प्रक्रियाओं का पढ़ी गई बातों के आधार पर विश्लेषण करें।

वर्कशीट में मिले जवाबों के आधार पर संदर्भ व्यक्तियों का संदर्भ समूह यह समझ बनाने की कोशिश करता हैं कि

अनुदेशकों को कहां दिक्कत आ रही है और उनकी मदद कैसे की जा सकती है। इसके आधार पर ट्यूटोरियल की योजना बनाई जाती है।

ट्यूटोरियल के दौरान संदर्भ व्यक्ति 8–10 अनुदेशकों के साथ बैठता है। इनमें अनुदेशकों को छोटे समूह में या बड़े समूहों में या व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करने के लिए जगह दी जाती है। ये ट्यूटोरियल तीन मुख्य सिद्धान्तों पर आधारित हैं–

1. सीखनेवाला भयमुक्त वातावरण में बेहतर सीखता है। (non threatening environment)
2. सीखनेवालों को अपनी गलतियों को स्वयं ठीक करने के मौके देना जरूरी है। (self correction)
3. सीखनेवाले एक दूसरे से सीखते हैं इसलिए उन्हें मिलकर गतिविधियां करने के लिए मौके देने चाहिए। (peer learning and collaborative learning)।

हिन्दी के ट्यूटोरियल के दौरान अनुदेशक, कई बार समूह में बैठकर, वर्कशीट में दिए गए पाठ को वापस पढ़ते हैं। जिन शब्दों और वाक्यों के अर्थ अनुदेशकों को समझ में नहीं आते हैं उन पर चर्चा होती है। जब जरूरत पड़ती है, तो समूह के साथ बैठा संदर्भ व्यक्ति उनकी मदद करता है। संदर्भ व्यक्ति का काम चर्चा को मुद्दे पर केन्द्रित रखते हुए, बात को आगे बढ़ाना भी है। कई बार संदर्भ व्यक्ति, पढ़ने के लिए नया पाठ भी ले जाते हैं। ट्यूटोरियल में अनुदेशकों को कई मुद्दों पर स्वतंत्र रूप से लिखने की जगह भी दी जाती है। अनुदेशकों को अपने लिखे हुए को स्वयं एक बार पढ़कर सुधार करने को कहा जाता है। फिर वे अपने लिखे हुए को अपने समूह के अनुदेशकों के सामने पढ़कर, उस पर चर्चा करते हैं और जरूरत महसूस होने पर वापस सुधार भी करते हैं।

गणित की वर्कशीट में अगर अवधारणा में समस्या दिखती है तो संदर्भ व्यक्ति किसी गतिविधि या वर्कशीट या सवाल द्वारा अनुदेशकों को अवधारणा समझने में मदद करते हैं। इस दौरान अनुदेशकों को बोर्ड पर सवालों को करने के मौके दिए जाते हैं। वे एक–दूसरे से समझने की कोशिश करते हैं कि उन्होंने सवाल किस आधार पर किया है। जब गाड़ी आगे नहीं बढ़ रही होती है, तो संदर्भ व्यक्ति मदद करते हैं। कई बार संदर्भ व्यक्ति अनुदेशकों की सोच को किसी अवधारणा या मुद्दे पर केन्द्रित करने के लिए, उनके सामने कुछ सवाल भी रखते हैं जिसमें वे सही दिशा में सोच सकें। जिन जगहों पर संदर्भ समूह को लगता है कि अनुदेशकों को और अभ्यास चाहिए, तो वे उन अवधारणाओं पर नई वर्कशीट बना कर अनुदेशकों से ट्यूटोरियल में करवाते हैं।

दो संदर्भ व्यक्तियों के अनुभव

हमने प्रशिक्षण कोर्स के तीनों स्तरों के अनुदेशकों को निम्न भाग का सवाल दिया– 2) 1001 (

अधिकांश अनुदेशकों के जवाब 5.5 या 5 या 50 या 50.5 थे। जब उनसे पूछा गया कि इस सवाल का अर्थ क्या है तो उन्होंने बताया कि 1001 को दो लोगों में बांटना है। इस पर हमारा अगला सवाल था कि ऐसा करने पर प्रत्येक को लगभग कितना मिलेगा?

अनुदेशक – 500

प्रशिक्षक– लेकिन आपके द्वारा किए गए हल में भागफल तो 500 के लगभग नहीं आ रहा है। ऐसा क्यों?

अनुदेशक – हां, आना तो चाहिए। लेकिन भाग तो सही दिया है।

***स्तर** III के एक अनुदेशक ने सही किया था। उन्हें भाग की प्रक्रिया को समझाने के लिए कहा गया।*

इस प्रक्रिया को समझाने के लिए ऐसे और सवाल कराए और इस बात पर ज़ोर दिया गया कि भाग या फिर कोई भी गणितीय संक्रिया करते समय सिर्फ प्रक्रिया को ही नहीं करना चाहिए, संभावित उत्तर का अनुमान लगाना भी चाहिए।

*इसी क्रम में **स्तर** II में प्रश्न दिया गया था जिसमें अनुदेशकों को समझाना था कि–*

$$\frac{1}{10}=\frac{10}{100}$$

सभी अनुदेशकों ने सवाल इस तरह से किया–

$$\frac{1\cancel{0}}{10\cancel{0}}=\frac{1}{10} \text{ इसलिए } \frac{1}{10}=\frac{10}{100}$$

परन्तु समझ के लिए सिर्फ इतना कर देना काफी नहीं होता है। अतः हमने अनुदेशकों से पूछा अगर इसे बच्चे को समझाना है तो कैसे समझाओगे। इस पर एक अनुदेशक ने असमर्थता जताते हुए कहा कि हम इसके लिए चित्र तो बना सकते है, परन्तु उससे दोनों भिन्नों को बराबर सिद्ध नहीं कर सकते। हमने उन्हें पहले ब्लेकबोर्ड पर चित्र बनाने को कहा।

कुछ समय सोचने के बाद एक अनुदेशक उठकर आए और कहा, कर के देखता हूं। गलत हो तो बता देना। यह तो हो गया एक बटा दस।

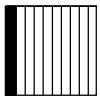

अब अगर मैं इसे और दस हिस्सो में बाटूंगा तो कुल 100 हिस्से हो जाएंगे।

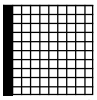

अब रंगे हुए हिस्से 10 हो गए और कुल 100 हिस्से।

पर कई बार बहुत सी बात करने के बावजूद हमें ऐसा लगता है कि हम ज्यादा सफल नहीं हुए– उदाहरण के तौर पर गिर्वा के स्तर I के साथ ट्यूटोरियल के दौरान अनुदेशकों के साथ स्थानीय मान की अवधारणा पर बात हो रही थी। अनुदेशकों को दो शिक्षकों की कक्षाओं के बारे में पढ़ने को दिया गया– एक अध्यापक पहले बच्चों को 1 से 10 तक गिनती रटवा और बार–बार लिखवा रहा था। फिर आगे गिनती सिखा रहा था– 1 और 1, ग्यारह, 1 और 2 बारह। दूसरी कक्षा में शिक्षक तिली बण्डल बनवाकर बच्चों की अवधारणा को स्पष्ट कर रहा था। इन दोनों कक्षा को लेकर अनुदेशकों से बातचीत की गई और एक स्तर पर जाकर लगने लगा कि अनुदेशक यह समझने लगे हैं कि तिली बण्डल से पढ़ाना लाभदायक है। अब उन्हें वर्कशीट के सवालों को करने को कहा गया। जब उत्तरों को जांचा गया तो हमने पाया कि 2 अनुदेशकों को छोड़कर अन्य सभी ने पहली पद्धति को अच्छा लिखा था और कारण दिया था कि बच्चे इससे जल्दी समझ जाते हैं।

इसके अलावा कुछ अनुदेशक अब आगे की पढ़ाई भी शुरू कर रहे हैं और वे प्रतियोगी परीक्षा में आने वाले सवालों को भी यहां पूछते हैं कई बार चर्चा में वह बोलते हैं कि इस तरह के कोर्स से उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं में काफी मदद मिलती है।

पूर्णिमा चौहान
स्नेहबाला जोशी
संदर्भ व्यक्ति

'बच्चों की सीखने की प्रक्रिया' विषय में अनुदेशकों के साथ ज्यादातर वर्कशीट ही वापस पढ़ी जाती है। अनुदेशकों से पाए हुए जवाबों के आधार पर संदर्भ व्यक्ति को पता होता है कि अनुदेशकों को कहां मुश्किल आ रही है। वे उन जगहों पर अनुदेशकों के साथ चर्चा करते हैं, सवाल उठाते हैं और उन्हें मुद्दों पर समझ बनाने में मदद करते हैं। अनुदेशक ऐसी चर्चाओं में एक दूसरे के कक्षा के अनुभवों से भी सीखते हैं।

प्रत्येक स्तर पर वर्कशीट और ट्यूटोरियल की यह प्रक्रिया एक वर्ष तक चलती है और वर्ष के अंत में प्रत्येक विषय में एक लिखित परीक्षा ली जाती है। लिखित परीक्षा और वर्कशीट के आधार पर अनुदेशकों को अगले स्तर में क्रमोन्नत किया जाता है। आज की स्थिति में अनुदेशक कोर्स के तीनों स्तरों पर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

हमने यह पाया कि अनुदेशकों की दोनों, गणित और भाषा की क्षमता में विकास हुआ है। तीसरे स्तर तक आते–आते

अनुदेशकों की वर्तनी, विराम चिन्ह लगाने, व्याकरण और शब्द भण्डार की गलतियों में सुधार हुआ है। लेकिन एक व्यवस्थित और सुसंगत तरीके से लिखने में अभी भी अनुदेशकों को मुश्किल होती है। वे घटनाओं के क्रम को समझने में तो सक्षम होते हैं पर कई बार कही गई बात में छुपी हुई मूल बात या भाव नहीं समझ पाते हैं।

एक अनुदेशक द्वारा तीन अलग–अलग समय पर लिखे गए पाठ–

संवाद स्थापित करने से पूर्व :

घुमा हुआ एक बच्चा मिला है। उसके मदद करना है।

मुझे एक लड़का मिला है। उसकी उम्र 7 वर्ष का है। लाल सट पहनी है। हरा पेट पहना पैरों में जौते नहीं है। वह लाल रंग का है। वह बस अस्टन पर रोता हुआ घुम रहा था। मैने पुछा अरे लड़के आप क्यो रो रहे हो। लड़के ने बताया गया है कि मैं दो दिन से भुखा हूँ। मेरे माता–पिता मुझे छोड़कर कही चले गये है। तो मुझे उसे बच्चे को होटल पर ले जाकर रोटी लिखाई और अभी मेरे पास है।

नाम
मेरा पता गांव झाबला
पोस्ट पडूणा
तं. गिर्वा

वर्षभर अनेक क्रियाकलापों के माध्यम से अनुदेशकों के साथ संवाद स्थापित करने के बादः

विज्ञापन

दिनांक 28–01–2010 को उदयपुर के गोविन्द नगर में एक अज्ञात बालिका मिली है। जिसके कपड़े हरे रंग के फटे पुराने है। वह लड़की गोरे रंग की घुघरू बालों वाली है। उसकी उम्र लगभग 10 वर्ष की होगी।

यह लड़की गोविन्द नगर पुलिस चौकी में सुरक्षित है।

सम्पर्क करे

मो.न. 9460402137

पुलिस चौकी गोविन्द नगर
उदयपुर

प्रशिक्षण के दूसरे स्तर के दौरान–

इस लेख की शुरूआत आत्मकथा के रूप में की थी। लेकिन 4–5 वाक्य के बाद में पढ़ने पर फिर से उसका आत्मकथा का प्रारूप छूट गया है, फिर अन्त में वापस पतंग की अपनी भाषा को लिखा है।

बच्चों की रूचिपूर्ण खेल पतंग : आत्मकथा का पंतग

मुझे बनने में कई वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है, जैसे लकड़ी को पिछकर लुग्दी बनाए जाती है, और पुनः सुखाया जाता है, सुखाने के बाद मेरी प्रेस की जाती है। प्रेस के ततपश्चायत मुझे ताक में रख दिया जाता है। फिर मुझे तीन डण्डे या लकड़ियों की शख्तः आवश्यकता रहती है। अलग–अलग कलाकार मुझे अलग–अलग रूपों से सजावट के माध्यम से बनाते है। अच्छे कलाकार पंतग को अच्छी बनाने के लिए अच्छा सा डिजाइन करते है, और दिखने में सुन्दर लगती है। फिर फैक्ट्री वाले ठीक–ठीक पतंग को अलग–अलग मूल्य पर अलग–अलग से सेट जमाया जाता है। कम्पनी या फैक्ट्री में हर कोई सीधा दुकानदार नहीं जा सकता है। वहां तो केवल हॉलसेलर विक्रेता ही वहां से मात लाता है, और डिस्टीवेटर और उस पतंग को

किराणा वाले को लाकर देता है। किरणा वाला कुछ पैसा निकाल कर पैसा वसूल करता है। ग्राहक तो वहां किरणा वाला उस पतंग का जितना मूल्य मांगेगा उसे तो देना ही पड़ेगा। नहीं तो बालक उसका नाराज हो जाएगा, और छेड़ा छेड़ी करेगा। एवं पूरे दिन नाराजगी उस पर थम जाएगी। भले बालक भूखा न रहा जाता, मगर उसे उस चीजे लेने की इच्छा रहती है, वो लेकर ही छूटेगा, यह बात अक्सर देखने को मिल रही है। वह लेने के बाद वहां बड़ा खुश हो जाएगा और सभी बच्चों के साथ बातचीत करेगा कि मेरे पिताजी ने नए पतंग लाकर दी है, और मैं बड़े मजे से उड़ाऊंगा।

दूसरे दिन वहा अपने सभी दोस्तों के साथ ऊँचे पहाड़ पर जा कर पतंग उड़ाते है और बहुत शोर गुल के साथ आवाज करके मजा लेते है, कि मेरी पतंग सबसे ऊँची चल रह है, और दिखने में भी अच्छी लग रही है, इस प्रकार छोटे बच्चे अपना विचार–विमर्श छड़ा–बड़ा कर किया करते हैं। कभी पतंग का धाँगा टूट जाता है, तो पतंग दूसरे गाँव में जाकर गिर पड़ती है वो बच्चा नाराज हो जाता है, उन–उन बच्चों की लड़ाई–झगड़ा हो जाता है। बच्चों में दोनों प्रकार की भावना जुड़ी हुई होती है। वो इतना समझ नहीं पाते, लड़ाई भी करते है और कुछेक समयानुसार वापस बोल लेते हैं। यह प्रक्रिया बच्चों में होता है। बच्चे मेरी अपनी सुन्दरता को देख प्रसन्न होते है और वहा मन पसन्द के अनुसार पतंग को लेते है और पतंग के द्वारा मेरा खेल–खेला जाता है।

आजकल मेरे बनाने की काम हरेक घरों में भी किया जाता है। यहा बच्चों के द्वारा खेला जाने वाला एक रूचिपूर्ण माध्यम है। वहां खेल–खेल में कुछ ज्ञान की बाते भी सिखता है।

प्रशिक्षण के तीसरे स्तर तक अनुदेशकों की गुणा, भाग, भिन्न, दशमलव भिन्न, अनुपात, समानुपात, क्षेत्रफल, परिमाप की अवधारणाओं और संख्याओं की समझ में भी विकास हुआ है।

मौटे तौर पर ''बच्चों की सीखने की प्रक्रिया'' के बारे में हमें लगता है कि अनुदेशक यह समझते हैं कि बच्चे एक कोरी स्लेट नहीं है। वे जब केन्द्र पर आते हैं, तो अपने कई अनुभवों के साथ आते हैं, जिनको पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया में, इस्तेमाल किया जा सकता है। बच्चों का गलतियां करना सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का एक स्वाभाविक भाग है। गलतियां यही नहीं बताती कि बच्ची को क्या नहीं आता है, पर यह भी बताती है कि उसे क्या आता है। वे इस बात के प्रति भी सजग हैं कि मानसिक या शारीरिक दंड बच्चों को बेहतर सीखने में मदद नहीं करता पर उन्हें हतोत्साहित करता है।

अनुदेशक यह भी समझते हैं कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे को भाषा सिखाने में कहानी सुनने–सुनाने की महत्वपूर्ण भूमिका है। वे कहानियों पर बच्चों के लिए अलग–अलग तरह के सवाल बना सकते हैं। वे कुछ हद तक यह बात समझने लगे हैं कि बच्चों को पढ़ना और लिखना सिखान में पहले वर्ण, फिर शब्द और फिर पाठ, गोण मंत्र नहीं है और जरूरी बात यह है कि बच्चों को भाषा सिखाने के लिए एक सार्थक संदर्भ दिया जाए।

अनुदेशक यह भी समझते हैं कि प्राथमिक स्तर पर गणित को ठोस वस्तुओं से पढ़ाना जरूरी है। वे इस बात के प्रति भी संवेदनशील हो गए हैं कि कक्षा की गणित को बच्चों के जीवन की गणित से जोड़ना जरूरी है। वे ये भी समझने लगे हैं कि बच्चों को सवालों को अलग–अलग तरीकों से करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। हमें यह भी लगता है कि स्थानीय मान, गुणा और भाग की अवधारणाओं को अनुदेशक बेहतर समझा सकेंगे, पर क्योंकि हमने इन अनुदेशकों की कक्षाएं नहीं देखी हैं, यह बात हम दावे के साथ कह नहीं सकते।

नम्रता बत्रा, ज्योति चौरडिया – विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केन्द्र में कार्यरत हैं।